व्यक्तित्व एवं समाज निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका

हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के संदर्भ में

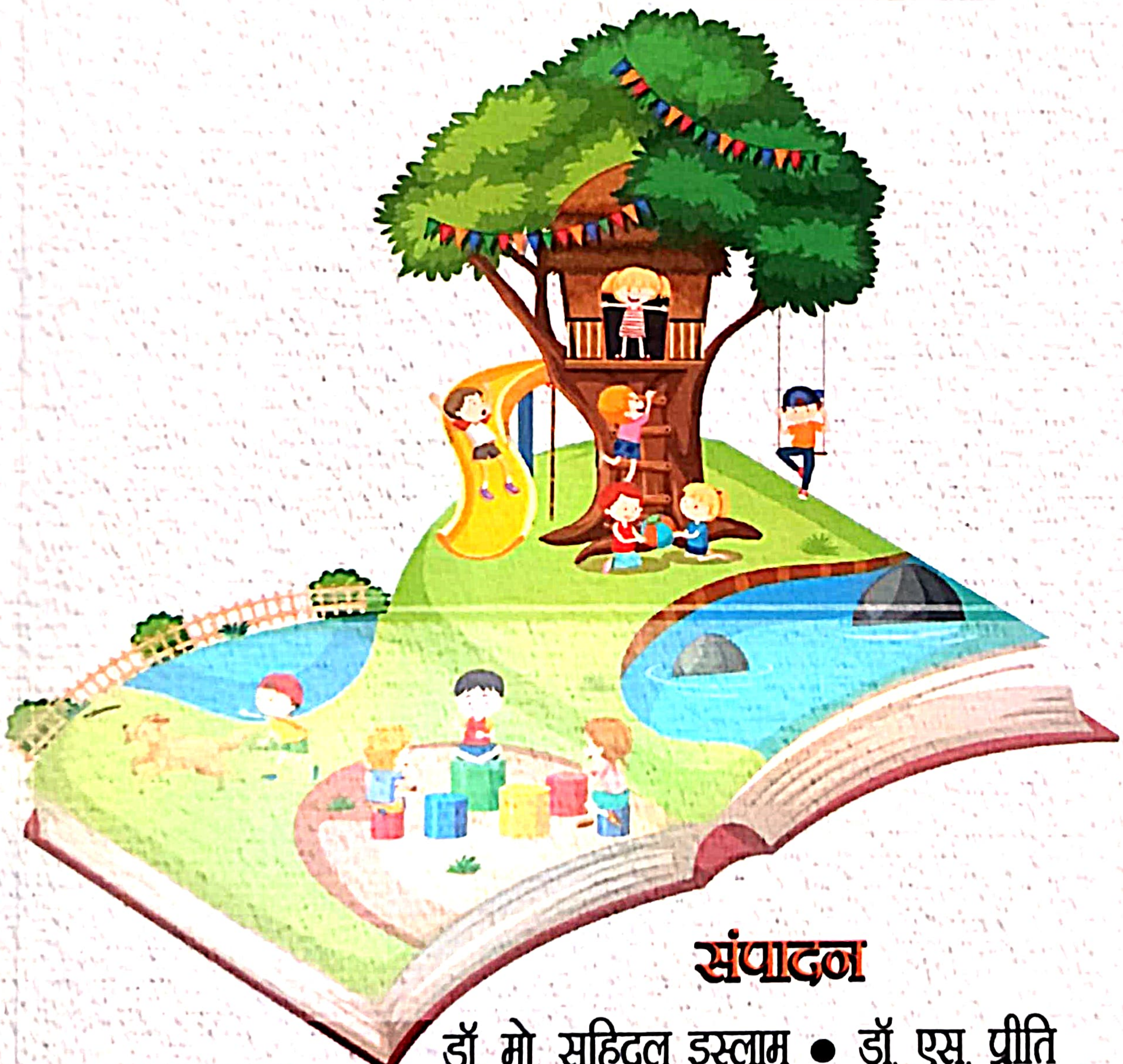

संपादन

डॉ. मो. सहिदुल इस्लाम • डॉ. एस. प्रीति

डॉ. एस. रजिया बेगम

ISBN : 978-93-92703-94-2
© लेखक
प्रथम संस्करण : 2025
प्रकाशक :
सृजनलोक प्रकाशन
बी–1, दुग्गल कॉलोनी, खानपुर, नई दिल्ली –110062
मोबाइल : 7654926060
ईमेल : srijanlok@gmail.com

आवरण चित्र : नेट से साभार
आवरण सज्जा : संतोष श्रेयांस
मुद्रक : बी.क्यू.एस. सर्विसेज, खानपुर नई दिल्ली - 62

Vyaktitva Evam Samaj Nirman me Baal Sahitya ki Bhumik : Hindi Evam Bharatiya Bhashaon ke sandrabh me.
Editted By : Dr. Md. Shwahidul Islam, Dr. S Preeti
Dr. S Razia Begum
Published by : Srijanlok Prakashan,
B - 1, Duggal Colony, Khanpur, New Delhi – 110062

अनुक्रमणिका

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'	बाल साहित्य के विकास में कनउजी लोक साहित्य का प्रदेय	5
डॉ. नरेश कुमार	हिमाचल का बाल साहित्य (21वीं सदी की हिन्दी कविता के विशेष सन्दर्भ में)	17
डॉ. एस. प्रीति	प्रिशियस बेबी एक मनोविश्लेषणात्मक चित्रण	24
डॉ. एस रजिया बेगम	व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला हैं बाल कथाएं	28
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	आधुनिक तमिल बाल साहित्य के पितामह अष. वल्लियप्पा	33
डॉ० रेखा शर्मा	बाल साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ताः भविष्य की चुनौतियाँ और संभावनाएं	39
डॉ. अनिता सिंह	कैसा हो डिजिटल युग का बाल साहित्य?	44
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	बाल साहित्य के विविध आयाम	52
डॉ. एस. विजया	बालकों के विकास में बाल साहित्य का योगदान	60
डॉ. आर. कविता	समाज और राष्ट्रीय निर्माण में बालसाहित्य का योगदान	67
रानी परिहार	दिव्या माथुर कृत बाल उपन्यास "बिन्नी का बिल्ला" में समाहित बाल चेतना	72
डॉ. मो. मजीद मियां	हिन्दी साहित्य में बाल कविता	77
जय कुमार	दीनदयाल शर्मा की कविताओं में बालमन का विश्लेषण	84
डॉ. ए रमणी	चरित्र और व्यक्तित्व में बाल साहित्य का योगदान	89

आधुनिक तमिल बाल साहित्य के पितामह अष. वल्लियप्पा

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

सहा. प्राध्यापक - विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

विस्टास, चेन्नई - 600117

बच्चे मानव जीवन का अभिन्न अंग हैं, मानवता की सबसे बड़ी खुशी और संतुष्टि हैं, ईश्वरीय वरदान हैं। उन्हें संस्कारवान बनाना हमारा परम कर्ताव्य है। भावी पीढ़ी को सक्षम एवं समृद्ध बनाने में ही हमारी सफलता निर्भर होती है। योग्य पीढ़ी ही सुखमय और शांतिपूर्ण देश-दुनिया की नीव है। उन्हें सबल और समर्थ बनाने में साहित्य का योगदान अप्रतिम है। बाल साहित्य की रचनाएं बच्चों के मानसिक विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। खेल-खेल में उन्हें सतज्ञान प्रदान करना केवल साहित्य से ही अनायास संभव है। इस दृष्टि में बच्चों का कवि होना अत्याधिक गर्व की वात है। बच्चे के संसार बिना किसी आडंबर के, प्रेम और मासूमियत से भरा हुआ एक अद्भुत बग़ीचा है। उसमें भंवरे की तरह उड़ते हुए, जो मीठी कविताएँ वच्चों के दिलों में रोपते हैं, वह व्यक्ति सच में एक अनमोल रचनाकार होता है। दीर्घ समय के लिए बच्चों का ध्यान आकर्षित करना कोई आसान काम नहीं है।

जब वच्चों के कवि की बात होती है, तो तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध श्री. अप. वल्लियप्पा जी का नाम स्वाभाविक रूप से हमारे सामने आता है। आज के ज़माने में जब बच्चों के लिए डिजिटल दुनिया ही उनका मुख्य आकर्षण बन चुका है, ऐसे में अष.वल्लियप्पा को याद करना और उनके योगदान को सराहना सार्थक और अनिवार्य हो जाता है।

तमिल बाल साहित्य का उद्भव संघम साहित्य से हुआ है। तोलकापियम, पुरनानूरु, अगनानूरु, तिरुक्कुरल, सिलपदिकारम, मणिमेगाले, भक्ति साहित्य, औवयार साहित्य, आदि में बाल कविताएं एवं बालोपयोगी कहानियाँ उपलब्ध है। हालांकि ये रचनाएँ विशेष रूप से बच्चों के साहित्यिक रूप में नहीं थीं, फिर भी वच्चों की बुद्धि और सोच को उत्तेजित करने वाली थीं।

तत्पश्चात आधुनिक युग में अंग्रेजों की वजह, पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से तमिल आधुनिक साहित्य में बच्चों के लिए बाल साहित्य की विधा अंकुरित हुई।

क. नमशिवायम (20.02.1876–13.03.1936), जो 1876 में जन्मे थे, ने बच्चों के लिए कई सुंदर गीत और कविताएँ लिखीं। इनमें से एक लोकप्रिय कविता है जिसका शीर्षक 'एरुम्बु' है, जो बच्चों के लिए विशेष रूप से रचनात्मक और शिक्षाप्रद थी।

इसके बाद कविमणी देसिय विनायगम पिल्लई (27.07.1876 – 26.05.1954) की रचनाएँ आज भी बच्चों के दिलों में और बड़े होकर भी बच्चों की तरह सोचने वाले व्यक्तियों के मन में स्थायी स्थान बनाई हैं। बाल साहित्य के क्षेत्र में कविमणी का नाम सदैव आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है।

इनके बाद महाकवि भारदियार और पावेंदर, जिन्हें भारदिदासन के नाम से जाना जाता है, ने भी बच्चों के लिए अद्भुत रचनाएँ कीं। विशेष रूप से, भारदियार की 'पुदिय आत्तिच्चूडि' और भारदिदासन की 'इलयोर आत्तिच्चूडि' जैसी काव्य रचनाएँ बाल साहित्य के लिए अमूल्य धरोहर साबित हुईं।

इन लेखकों के समान, मयिलै शिव. मुत्तु, वाणीदासन जैसे साहित्यकारों ने भी बाल साहित्य के क्षेत्र में योगदान दिया। इन सबके बीच, पेरियसामि तूरन ने बाल साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपनी कठिन मेहनत से दस खंडों के 'बाल विश्वकोश' की रचना की। यह अभूतपूर्व काव्य रचनाएँ आज भी बाल साहित्य के लिए एक अमिट धरोहर मानी जाती हैं। इस सिलसिले में बाल साहित्य के क्षेत्र में 1922 के बाद बाल कवि अष. वल्लियप्पा ने कदम रखा। उन्होंने बाल साहित्य में एक विशिष्ट और अलग मार्ग अपनाया। इन्हें तमिल आधुनिक बाल साहित्य के पितामह के रूप में, याद किया जाता है।

इस प्रकार आधुनिक तमिल वाल साहित्य कविमणी देसिय विनायकम पिल्लई, सुब्रमण्य भारदि, भारतिदासन, म.प. पेरियसामी तूरन, अल. वल्लियप्पा, पूवण्णं, सुकुमारन, म.कमलवेलन, एम.एल.तंगप्पन, म.कोदंडम, रेवती, आयशा रा.नटराजन, सेल्ल गणपति, कुल. कदिरेसन, मु. मुरुगेश, की. सेतुपति, बालभारती, उदयशंकर, आदि अग्रणी बाल साहित्यकारों द्वारा पल्लवित और पुष्पित है। प्रस्तुत लेख में अल.वल्लियप्पा की साहित्यिक देन पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास किया गया है।

अल. वल्लियप्पा,

'एडु तूक्की पल्लिइलु , इंडरु पइलुम् सिरुवरे,
नाडु काक्कुम् तलैवराइ नालयु विलंगअ पोगिरार'

जैसे अपने आत्मविश्वास से भरे बाल कविता के साथ वाल साहित्य में प्रवेश कर, उन्होंने अपनी एक अलग परंपरा बनाई। बाल साहित्य के अग्रणी कवि कविमणी देसिय विनायकम पिल्लई, उनकी सराहना ऐसे करते हैं

'पल्लि सीरुवर सिरुमिर्य, पाडिपु पाडि मगिज़्वेय्द तेल्लतु तेलिंदअ सेंतमिज़िलु तेनार कविदैगल सेयदुतरुम, वल्लियप्पा..'

अर्थात ''पढ़ाई-लिखाई में खुशियाँ पाने वाले, स्वच्छ और स्पष्ट शुद्ध तमिल में शहद जैसी कविताएँ रचने वाले वल्लियप्पा...'

उन्होंने पुदुकोट्टई जिले के रायवरम गांव में 7 नवम्बर 1922 को जन्म लिया। उमैयाल आच्ची और अज़गप्पअ सेट्टियार उनके माता-पिता थे। रायवरम से चार किलोमीटर दूर स्थित कडियपट्टी भुमेश्वरस्वामी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। स्कूल जाते समय वह अक्सर पक्षियों के साथ गाते हुए आनंदित रहते थे।

इस दौरान एक दिन उन्होंने एक सुंदर गीत रचा, जिसे उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ गाते गाते जल्दी स्कूल पहुंच गए। उन्होंने तभी महसूस किया कि गाते हुए स्कूल आने से समय तेजी से बीत जाता है और दूरी का पता नहीं चलता है। सहपाठियों द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर उन्होंने सरल शब्दों में गीत रचना शुरू की, और इसमे अगर कभी कोई कठिनाई आती तो उसे तुरंत सुधार लेते। इस प्रकार उन्होंने अपनी रचनात्मकता को लगातार निखारा। महज 13 वर्ष की आयु में उन्होंने कविता लिखने की क्षमता हासिल कर ली। यहां यह उल्लेखनीय है कि मधुर शब्द और सुंदर भाषा केवल सुनने में सुख नहीं देते, बल्कि वे हमारे दिल और आत्मा को भी खुशी का अनुभव कराते हैं। गीतों में सरल शब्दों का उपयोग करने का महत्व उन्होंने पहले ही समझ लिया था और अपने जीवनभर इस सिद्धांत का पालन किया। इस क्षेत्र में उन्होंने पेरा. मदुरै मुथलियार, तिरु. इळवळगनार और राजमाणिकनार जैसे प्रमुख साहित्यकारों से मार्गदर्शन लिया।

1940 में वे चेन्नई पहुंचे और शक्ति पत्रिका के कार्यालय में खजांची के पद पर कार्य करने लगे। यहां से उन्होंने लेखन की शुरुआत की और कई साहित्यिक मित्रों से संपर्क स्थापित किया। 1941 में भारतीय बैंक में कार्य करने का अवसर मिला, और वहीं से कविता और लेखन का सिलसिला जारी रखा। 1944 में श्रीमती वल्लियम्मय आच्ची से उनका विवाह

हुआ, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इन दोनों को पांच बच्चे हुए।

पत्रिका संपादन कार्यः 1951 से 1954 तक उन्होंने 'पूनजोलै' नामक बाल पत्रिका का संपादन किया। इसके बाद, 1983 से 1987 तक, उन्होंने तमिल पत्रिका 'कल्की' द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका 'कोगुलम' में संपादक के रूप में कार्य किया। 1944 से 1954 तक उन्होंने पूरी तरह से बच्चों के साहित्य में रचनाएँ की और 'बाल माला', 'डमारम', 'संगु' और 'पूनजोलै' जैसी बाल पत्रिकाओं के लिए संपादक के रूप में कार्य किया।

उनकी साहित्यिक सेवाएंः

1950 के दशक में, श्री वल्लियप्पा और अन्य कुछ बाल साहित्यकारों ने मिलकर 1950 में एक बाल लेखक संघ की स्थापना की। इस संघ ने तमिल में बच्चों के साहित्य के विकास के लिए काम किया और बाल साहित्यकारों की कृतियों को प्रकाशित किया। श्री अ. वल्लियप्पा ने इस संघ में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जैसे सचिव, अध्यक्ष और सलाहकार।

साहित्य अकादमी के दिल्ली पुस्तक मेले में तमिल विभाग के प्रभारी के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने कोलंबो में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले की शुरुआत की।

बाल लेखक संघः

बाल साहित्य में योगदान देने वाले लेखकों के मार्गदर्शक के रूप में वल्लियप्पा ने 1950 में 'बाल लेखक संघ' की स्थापना की, जिससे तमिल बाल साहित्य को प्रोत्साहन मिला। उन्होंने बच्चों के लिए गाने लिखने वाले लेखकों को प्रेरित किया और उन्हें उत्साहित किया। उन्होंने न केवल तमिल में, वल्कि अन्य दक्षिण भारतीय भाषाओं में भी बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली किताबें प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनकी साहित्यिक देनः

वल्लियप्पा ने बच्चों के लिए 50 से अधिक किताबें और 2,000 से अधिक गाने लिखे हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ जैसे रोजाच्चेडि, उमाविन् पूनइ, अम्मावुम् अत्तैयुम्, मणिक्कु मणि, मलरुम् उल्लम्, कदइ सोन्नवर कदइ, मूँडरु परिसुगल, वर्मा रमणि, एंगल पाट्टि, गुदिरइ सवारि, नीला माला, नल्ल नणवर्गलु, आदि रचनाएं अत्याधिक लोकप्रिय हैं।

1944 में उनकी पहली कविता संग्रह 'मलारुम उल्लम' प्रकाशित हुई थी। उनका साहित्य न केवल सरल शब्दों में, बल्कि गहरे विचार और सजीव भावनाओं प्रस्तुति के लिए सुप्रसिद्ध हैं। यह रचनाएं आज भी पाठकों के दिलों में गहरी छाप छोड़ति है।

उनकी 'अम्मा इंगे वा वा, आसय मुत्तम ता ता।', 'मामपजमाम मामपजम, मलगोवा मामपजम', 'कै वीसम्मा कै वीसु, कडैक्कू पोगलाम कै वीसु', 'वट्टमानअ तट्टु, तट्टु निराय लड्डु,' आदि अनीकानेक सरल एवं सरस कविताएं तमिल बाल साहित्य की अमर बाल कविताएं है।

बाल कवि अज़. वल्लियप्पा ने पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों की मानसिकता को समझते हुए अनगिनत सरल और प्यारे गीत लिखे। अपने जीवनभर के साहित्यिक कार्यो के माध्यम से उन्होंने बच्चों के कल्याण के लिए कई अद्भुत किताबें, कविताएँ, कहानियाँ और निबंध लिखे।

पुरस्कार एवं सम्मानः

उनकी लंबी साहित्यिक यात्रा में उन्हें कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए। उनकी पुस्तक "नम नदिगल - II" का अनुवाद राष्ट्रीय पुस्तक निगम ने किया और इसे 14 भाषाओं में प्रकाशित किया। "मलरुम उल्लम" और "पाट्टिल गांधी कदै" जैसी कृतियाँ केंद्रीय सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं। "नल्ल नणबरगल", "पेरियोर वाज़विले", "चिन्नचिरु वयदिल" और "पिल्लै परुवत्तिले" रचनाएं तमिलनाडु सरकार द्वारा सम्मानित हैं। 1961 में प्रकाशित उनका कविता संग्रह "सिरिक्कुम पूक्कल" के लिए, उन्हें 'बाल कवि" की विशिष्ट उपाधि मिली। तमिल साहित्यकार तमिलवाणन ने उन्हें यह उपाधि प्रदान की।

1976 में, राष्ट्रपति श्री फरूकीन अली अहमद ने बच्चों के लेखक संघ के रजत जयंती समारोह में भाग लेकर अज़. वल्लियप्पा को विशेष पुरस्कार प्रदान किया। "पिल्लै कवियरसु" और "मझलय कवि चेम्मल" जैसे विशेष पुरस्कार अज़. वल्लियप्पा को प्राप्त हुए। 1982 में मदुरै कामराज विश्वविद्यालय ने उन्हें "तमिल पेरवै चेम्मल" से सम्मानित किया। 1985 में भारतीय बाल शिक्षा परिषद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में तत्काल संसद के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने उन्हें सम्मानित किया। 1988 में तंजावुर तमिल विश्वविद्यालय ने उन्हें "तमिल अन्नय" नामक विशिष्ट पुरस्कार प्रदान कर उन्हें नवाजा। उनके 85वें जन्मदिन (07.11.2006) के अवसर पर भारतीय डाक विभाग ने बाल कवि की स्मृति में विशेष "डाक पेटी" जारी किया, जो कि बाल साहित्य जगत की बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

निष्कर्ष :

अज़.वल्लियप्पा, अपने गीत और कहानियों के माध्यम से बच्चों की दुनिया में हमेशा के लिए जीवित रहेंगे। जिस प्रकार 'भारदियार' और 'भारदिदासन' की गीत परंपरा का अनुसरण किया जाता है, उसी तरह 'बाल कवि अज़.वल्लियप्पा' के योगदान को मान्यता देते हुए, यदि बाल साहित्य लेखकों द्वारा 'बाल कवि गीत परंपरा' का पालन किया जाए, तो वर्तमान में बाल साहित्य का पुनरुत्थान हो सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं। इस प्रकार, यदि उनकी गीत परंपरा जीवित रहती है, तो बाल साहित्य में एक नई चेतना और समृद्धि आएगी। अज़. वल्लियप्पा का योगदान बाल साहित्य में अतुलनीय है। उनकी रचनाएँ आज भी बच्चों के दिलों में जीवित हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेंगी। हमें विश्वास है कि यह बहुत जल्द होगी। जब तक बच्चों की दुनिया रहेगी, अज़.वल्लियप्पा की महानता और प्रसिद्धि बनी रहेगी, इसमें कोई संदेह नहीं!

संदर्भ वेबसाइटः

https://www.google.com
https://www.azhavalliappa.com/
https://swarajyamag.com/culture/remembering-the childrens-poet-azhavalliappa
https://ta.wikisource.org/wiki/
https://en-wikipedia.org/wiki/Azha-Valliappa
https://www.vikatan.com/literature/arts/
https://www.tamilvu.org/library/nationalized/
https://tamil.hindustantimes.com/tamilnadu/
https://chuttiulagam.com/
https://eluthu.com/poetprofile/Azha-Valliappa